1. **"जन्मदात्री जननी! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण..." पंक्ति में लेखक क्या व्यक्त कर रहा है?**
   A. क्रोध
   B. शिकायत
   C. कृतज्ञता
   D. उपेक्षा (C)

व्याख्या : लेखक अपनी माता के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता है और कहता है कि अनेक जन्मों में भी उनका ऋण नहीं चुका सकता।

2. **लेखक के अनुसार वह देश-सेवा में कैसे संलग्न हो सका?**
   A. मित्रों के कारण
   B. गुरु के कारण
   C. माता की दया से
   D. धन के कारण (C)

व्याख्या :

3. **धार्मिक जीवन में लेखक को किसका प्रोत्साहन मिला?**
   A. समाज का
   B. मित्रों का
   C. माता का
   D. अध्यापकों का (C)

व्याख्या : धार्मिक जीवन में भी माता के प्रोत्साहन को ही सहायक बताया गया है।

4. **यदि लेखक ने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया, तो माता ने क्या किया?**
   A. दंड दिया
   B. कठोर शब्द कहे
   C. प्रेम से समझाया
   D. बात करना बंद कर दिया (C)

व्याख्या : माता ने प्रेम भरे शब्दों में समझाया और उसके परिणाम के बारे में बताया।

5. **माता ने केवल पालन-पोषण ही नहीं, बल्कि किसमें भी सहायता की?**
   A. खेल-कूद में
   B. व्यापार में
   C. आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में
   D. राजनीति में (C)

व्याख्या :

6. **महान संकट में माता ने लेखक को कैसा बनाए रखा?**
   A. क्रोधित
   B. अधीर
   C. साहसी और धैर्यवान
   D. भयभीत (C)

व्याख्या : माता ने उसे कभी अधीर नहीं होने दिया और प्रेम भरी वाणी से सांत्वना देती रहीं।

7. **लेखक की एकमात्र इच्छा क्या थी?**
   A. धन कमाना
   B. ऐश्वर्य प्राप्त करना
   C. माता के चरणों की सेवा करना
   D. प्रसिद्ध होना (C)

व्याख्या : लेखक कहता है कि उसकी केवल एक इच्छा है—माता के चरणों की सेवा कर जीवन सफल बनाना।

8. **लेखक अपनी मृत्यु को किस सेवा में समर्पित मानता है?**
   A. परिवार की सेवा में
   B. मित्रों की सेवा में
   C. भारत माता की सेवा में
   D. समाज की सेवा में (C)

व्याख्या : लेखक विश्वास व्यक्त करता है कि वह भारत माता की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर रहा है।

9. **स्वाधीन भारत के इतिहास में किसका नाम उज्ज्वल अक्षरों में लिखा जाएगा?**
   A. लेखक का
   B. गुरु का
   C. माता का
   D. मित्रों का (C)

व्याख्या :

10. **लेखक अंतिम समय में क्या वरदान माँगता है?**
    A. धन
    B. जीवन
    C. हृदय विचलित न हो और परमात्मा का स्मरण कर सके
    D. विजय (C)

व्याख्या : वह प्रार्थना करता है कि अंतिम समय में उसका हृदय विचलित न हो और परमात्मा का स्मरण करते हुए शरीर त्याग करे।